Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

वर्तमान समय में श्रीमद् भागवद्गीता की महत्ता

डॉ. सुमन देवी
सहायक प्रोफेसर हिन्दी, संत मोहन सिंह खालसा लबाना गर्ल्स कॉलेज, बराड़ा,अंबाला।
Email: sumandevi4268@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171124
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 136-138
November. 2025
Submitted: 18 Oct. 2025
Revised: 28 Oct. 2025
Accepted: 11 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

सारांश

श्रीमद्भगवदगीता को हिंदू धर्म का सबसे पवित्र ग्रंथ माना जाता है ।गीता के उपदेश संपूर्ण मानव जाति का आज भी कल्याण करते हैं ।यह हमें जीवन जीना सिखाती है तथा हर समस्या का समाधान इसमें मिलता है ।गीता हमारा मार्गदर्शन करती है ।यह हमें बिना फल की इच्छा किए कार्य करना सिखाती है ।काम ,क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि से मुक्त करके परमात्मा से जुड़ना सिखाती है। यह हमें शरीर की नश्वरता और आत्मा के अमरता के बारे में बताती है ।शरीर की नश्वरता का ज्यादा शोक न करके हमें अपने कर्तव्य का पालन करना सिखाती है। यह हमें सभी परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखने का तथा शांति का संदेश देती है। मन और इंद्रियों पर नियंत्रण करना सिखाती है। जब भी हम गीता को पढ़ते हैं तो हमारे अंदर नए-नए भावों का संचार होता है। यह हमें संसार में रहते हुए अपने कर्तव्य का पूर्ण पालन करना सिखाती है । गीता का अभ्यास करने वाला पुरुष भगवान को भी अपने अधीन कर लेता है तथा मुक्ति उसकी दासी बन जाती है। वह दूसरों के लिए भी मोक्ष का दरवाजा खोल देता है ।गीता का गौरव तो गायत्री मंत्र से भी बढ़कर है। यह हमें अज्ञान के रास्ते से दूर करके ज्ञान का रास्ता दिखाती है। यदि हम गीता के उपदेशों का पालन करें तो जीवन के सभी दुखों और चिंताओं से मुक्त हो सकते हैं।

मुख्य शब्द: *गीता, कर्तव्य,अहंकार , आत्मा, ज्ञान, अवतार ,कल्याण और विवेक*

प्रस्तावना

कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था वह श्रीमद् भगवदगीता के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीमद भगवद गीता को हिंदू धर्म में बड़ा ही पवित्र ग्रंथ माना जाता है ।गीता के माध्यम से ही भगवान श्री कृष्ण ने संसार को धर्म के अनुसार कर्म करने की प्रेरणा दी है। वास्तव में यह उपदेश भगवान श्री कृष्ण ने कलयुग को ध्यान में रखते हुए ही दिया है ।श्रीमद् भगवदगीता किसी काल ,धर्म, संप्रदाय या जाति विशेष के लिए नहीं अपितु संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए है। गीता में 18 अध्याय तथा 700 श्लोक हैं। उनमें हर उसे समस्या का समाधान है जो कभी ना कभी हर मनुष्य के सामने आती है। गीता का प्रसंग इतना गंभीर है की आजीवन निरंतर अभ्यास करने पर भी इसका अंत नहीं होता। इसको पढ़ कर नये - नये भाव पैदा होते हैं ।गीता में अर्जुन को श्री कृष्ण ने जो उपदेश दिए थे वह आज भी उतने ही महत्वपूर्ण है। गीता में आत्मा की अमरता का वर्णन किया गया है। आत्मा अजर, अमर ,पुरातन तथा सनातन है ।आत्मा को न तो कोई शस्त्र काट सकता है ,न अग्नि द्वारा जलाया जा सकता है, न जल द्वारा भिगोया जा सकता है , न वायु द्वारा सुखाया जा सकता है।

जैसे-" नैनम छिन्दंती शस्त्राणि नैनम दहति पावक:।
न चैनम क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत:।।1

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. सुमन देवी, सहायक प्रोफेसर हिन्दी, संत मोहन सिंह खालसा लबाना गर्ल्स कॉलेज, बराड़ा,अंबाला।

How to cite this article:
देवी, . सुमन . (2025). वर्तमान समय में श्रीमद् भागवद्गीता की महत्ता. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 136–138. https://doi.org/10.5281/zenodo.17892816

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17892816
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार जन्म ग्रहण करना होता है और एक कर्म अवधि समाप्त हो जाने पर मरना भी होता है जिससे वह दूसरा जन्म ले सके ।इस प्रकार मुक्ति प्राप्त किए बिना ही जन्म मृत्यु का चक्कर चलता रहता है । इसलिए इस शरीर के लिए दुख नहीं करना चाहिए ।जैसे –

"जातस्य ही ध्रुवों मृत्युध्रुर्वम जन्म मृतस्य च।
तस्माद परिहार्य अर्थे न त्वं शोचितु महसि।।"2

गीता एक सार्वभौमिक तथा सार्वजनिक ग्रंथ है। जब मनुष्य कर्तव्य और अकर्तव्य के चक्कर में फंस जाता है तो उस समय गीता ही मनुष्य का मार्गदर्शन करती है ।इस संसार में रहते हुए अपने उत्तरदायित्व का पूर्ण निर्वाह करना ही गीता की शिक्षा है ।भारतीय और विदेशी सभी विद्वान गीता से प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं। शंकराचार्य, निंबार्क रामानुज आदि सभी आचार्यों ने गीता से प्रेरणा ली है ।बाल गंगाधर तिलक ने भी गीता की उपयोगिता को इस प्रकार व्यक्त किया है -"भक्ति और ज्ञान का मेल कराके इन दोनों का शास्त्रोक्त व्यवहार के साथ संयोग करा देने वाला और इसके द्वारा संसार से दुखित मनुष्य को शांति देकर निष्काम कर्तव्य के आचरण में लगा देने वाला , गीता के समान बाल बौद्ध ग्रंथ, संस्कृत की कौन कहे , समस्त संसार के साहित्य में भी नहीं मिल सकता ।"3

गीता का गौरव तो गायत्री मंत्र से भी बढ़कर है क्योंकि गायत्री जप से केवल जपकर्ता ही भोग और मोक्ष प्राप्त करता है परंतु गीता का अभ्यास करने वाला पुरुष तो मुक्तिदाता भगवान को ही अपने वश में कर लेता है। मुक्ति उसकी दासी बन जाती है। वह दूसरों के लिए भी मोक्ष का दरवाजा खोल देता है । आज के इस वैज्ञानिक युग में मनुष्य इतना व्यस्त है कि उसे अध्ययन करने को अधिक समय नहीं मिलता। यदि मनुष्य अपने हाथ में गंगाजल भी ले तो वह उसी समय पापों से मुक्त हो जाता है ।उसी प्रकार यदि कोई भागवद् गीता का अनुशीलन करता है तो उसे कोई दूसरे वैदिक साहित्य और अन्य ग्रंथों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं रहती ।जैसे की गीता में कहा गया है कि –

"गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्मा द्विनिःसृता।"4

गीता की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए जयदयाल गोयंदका ने कहा है कि -"शास्त्रों का अवलोकन और महापुरुषों के वचनों का श्रवण करके मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि संसार में श्रीमद् भगवदगीता के समान कल्याण के लिए कोई भी उपयोगी ग्रंथ नहीं है ।गीता में ज्ञान योग, ध्यान योग ,कर्म योग, भक्ति योग आदि जितने भी साधन बतलाये गये हैं ,उनमें से कोई भी साधन अपनी श्रद्धा ,रुचि और योग्यता के अनुसार करने से मनुष्य का शीघ्र कल्याण हो सकता है।"5

भगवद् गीता का प्रयोजन मनुष्य को भौतिक संसार के ज्ञान से उभारना है। प्रत्येक व्यक्ति अनेक प्रकार की कठिनाइयों से गिरा रहता है उस समय गीता ही मनुष्य को सही रास्ता दिखाती है ।यदि हम गीता के उपदेशों का पालन करें तो जीवन के दुखों तथा चिंताओं से मुक्त हो सकते हैं। मनुष्य को इस संसार में निष्काम भाव से कर्म करते रहना चाहिए फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। जैसे श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश देते हुए कहा है कि-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुः भूर्मा ते संगोअस्त्वकर्मणि।"6

प्रत्येक मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है परंतु उसे फल से अनासक्त होकर कर्म करना चाहिए। ऐसा निष्काम कर्म ही मनुष्य को मुक्ति पथ की ओर ले जाता है। गीता में कहा गया है कि जब-जब धर्म का पतन होता है और अधर्म की प्रधानता होने लगती है तब तब भगवान श्री कृष्ण अवतार धारण करते हैं ।जैसे-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत ।
अभ्युत्थानं धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।7

भगवान के प्रत्येक अवतार का कोई न कोई उद्देश्य होता है। कभी वे अत्याचार को रोकने के लिए तो कभी अहिंसा के वैदिक नियमों की स्थापना करने के लिए अवतरित होते हैं। कृष्ण कहते हैं कि मैं भक्तों का उद्धार करने दुष्टो का विनाश करने तथा धर्म की फिर से स्थापना करने के लिए हर युग में प्रकट होता हूं ।

मनुष्य का अहंकार नहीं करना चाहिए ।अहंकार के रहने से न ज्ञान का उदय होता है ,न ही गुरु की कृपा प्राप्त होती है ।जब मनुष्य यह सोचता है कि संसार में उसका कुछ भी नहीं है यहां तक कि मन ,बुद्धि वाणी आदि कुछ भी नहीं है। सब कुछ भगवान का है तो

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

वह भगवान से जुड़ जाता है और उसके मन को शांति मिलती है ।काम,क्रोध, लोभ ये तीनों ही अवगुण नर्क का द्वार है। जिस मनुष्य में यह तीन अवगुण होते हैं वह दूसरों को दुख देकर अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगा रहता है और उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलती। हमे अपनी इंद्रियों को वश में करके विवेक के अनुसार कार्य करना चाहिए। अपने कर्तव्य का पालन करने में यश-अपयश, हानि- लाभ का विचार नहीं करना चाहिए। जो मनुष्य अपनी इच्छाओं को त्याग कर और अहंकार रहित होकर अपने कर्तव्य का पालन करता है उसी के मन को शांति मिलती है। वास्तव मे गीता की उपयोगिता इस बात में निहित है कि मनुष्य मोह को त्यागकर श्रद्धा और भक्ति के साथ गीता का नित्य अध्ययन और मनन करें। इसी में मानव, समाज ,देश और राष्ट्र का कल्याण निहित है ।हमें गीता के सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए सदैव इसका सम्मान करना चाहिए तथा इसमें बताया गया ज्ञान अपनाना चाहिए।

संदर्भ

1. श्रीमद्भागवद्गीता 2/23
2. श्रीमद्भागवद्गीता -27/77
3. गीता रहस्य-पृ.1- तिलक
4. श्रीमद्भागवद्गीता-12/7
5. उपरिवत -7/18
6. उपरिवत-2/47
7. श्रीमद्भागवद्गीता यथारुप- श्रीमद् ए.सी .भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद 7/141